लोकराग गीतमाला —१

भोजपुरी, मैथिली, मगही

सोहर

सोहर, खेलवना, बघाव व मंगल गीतों का गुलदस्ता



गीत संकलन : चंदन तिवारी

संपादक : निराला बिदेसिया

पुरबिया तान

लोकराग गीतमाला की पहली पुस्तिका आप पढ़ रहे हैं. इच्छा बहुत दिनों से रही ऐसी पुस्तिका श्रृंखला शुरू करने की लेकिन योजना जन्माष्टमी के एक दिन पहले बनी कि इसे शुरू करना है तो फिर क्यों न जन्माष्टमी से शुरुआत हो. जन्माष्टमी इसलिए कि यह सोहर का दिन होता है और सोहर को लोकगायन की दुनिया में, संस्कार गीतों की दुनिया में प्रथम गायन माना गया है.

सोहर की चर्चा जैसे ही होती है, इससे जन्मोत्सव के गीतों का बोध होता है. यह लोकप्रिय है भी उसी अवसर के लिए लेकिन सोहर का दायरा या संसार वहीं तक सीमित नहीं है. लोकगायन में जिन एकाध विधाओं के दायरे का अपार विस्तार है, बहुतेरे आयाम हैं, उनमें सोहर एक प्रमुख विधा है. जन्मोत्सव के समय तो सोहर गाने की लोकप्रिय चलन है ही लेकिन सोहर तो स्त्री के गर्भ ठहरने से लेकर बच्चे के जन्म के छठी और बारहवीं तक चलता है. सिर्फ इतना ही नहीं, बच्चे के जन्म या उससे जुड़े संस्कार या प्रक्रियाओं से इतर सोहर का संसार सुख,दुख,प्रेम,बिछोह,आक्रोश सबको अपने में समेटता है. ऐसे अनेक पारंपरिक सोहर गीत मिलते हैं, जिनका संबंध जन्म के किसी विध से नहीं होता लेकिन लोकगायन में उसे सोहर की परिधि में ही रखा जाता है. रामनारायण तिवारी जैसे लोक अध्येता कहते हैं कि सृजन की रागात्मक अभिव्यक्ति ही सोहर है. जैसे रोपनी के दिनों में खेतों में जब महिलाएं रोपनी शुरू करती हैं तो वह भी सोहर गाती हैं. प्रेम का जब सृजन होता है, तब भी सोहर होता है. स्त्री जब अपार दुख में होती है, तब भी सोहर गाती है. स्त्री को जब आक्रोश व्यक्त करना होता है, तब भी वह सोहर को अपनाती है. गीतों की दुनिया में ऐसे अनेक उदाहरण मिलेंगे, जिनसे इन बातों की पुष्टि होती है.

जिसे लोकप्रिय शैली में सोहर माना जाता है, वह सिर्फ सोहर न होकर अलग—अलग विधाओं के गीत भी होते हैं. सोहर एक बड़ी छतरी की तरह सबको अपने आगोश में समाये रखता है. बच्चा के जन्म से पहले गर्भधारण का गीत अलग होता है. बच्चा जब जन्म लेता है तो पुरखा,देवता, गांव जवार को जगाने का गीत अलग होता है. वह भी सोहर होता है. यह जो पुरखा, गांव—जवार या देवता को जगाने का गीत होता है, उस पर गौर करेंगे तो पायेंगे कि इन गीतों में पुत्र या पुत्री प्राप्ति का विभेद नहीं होता बल्कि एक जीव के धरा पर आने की बात बिंब के रूप में सामने आता है.

इतने गीतों के बाद मंगल गीतों की दुनिया शुरू होती है, जिसे लोकप्रिय शैली में सोहर कहा जाता है. उन मंगल गानों में खेलवना अलग होता है, जो जच्चा और बच्चा को प्रसन्न करने के लिए गाया जाता है. खासकर के जच्चा के मनोरंजन के लिए, उसकी पीड़ा को कम करने के लिए. मंगल गान अलग होता है, जिसे आशीर्वादी गीत भी कहते हैं. बधाव गीत अलग होता है, जिसके जरिये बधाई देने की परंपरा रही है. बच्चे को जब पहली दफा काजल लगाया जाता है तो आंख—आंखिन का गीत अलग होता है. छठिहार का गीत अलग होता है और कई इलाकों में छठिहार की बजाय बारहवीं की भी परंपरा है, उकसे गीत अलग होते हैं. इतने तरह के गीतों को सोहर अपने में समेटता है.

आज कृष्ण के जन्म का दिन है तो सोहर की यह पुस्तिका आपके पास है.बहुत हड़बड़ी में यह अंक आपके सामने आ सका है. लोकप्रिय गीतों को लिया गया है. भोजपुरी, मैथिली,मगही गीतों को इस पुस्तिका में शामिल किया गया है. इस अंक के गीतों का चयन पुरबियातान गायिका चंदन तिवारी ने किया है. उन्होंने उन्हीं गीतों को इस अंक में शामिल किया है, जिसे वह गाते रही हैं. लोकराग गीतमाला की यह पुस्तिका क्रमशः आपके पास अलग—अलग विधाओं व विषयों पर पहुंचेगा. अगले अंक से इसमें अनेक सुधार और विस्तार दिखेंगे. हर गीत का मायने—मतलब भी साथ होगा. यानी उसकी व्याख्या भी. फिलहाल कृष्णाष्टमी की शुभकमानाओं के साथ आपके सुझाव—सलाह की उम्मीद के साथ लोकराग गीतमाला की पहली पुस्तिका आपको सप्रेम भेंट है.

- निराला बिदेसिया

पुरबिया तान

1

प्रथम गनेस पद बदन, चरन हम मनाइले हो

ललना, बिघिन हरन गननायेक, मंगलदायेक हो

चढ़ी गइले पहिला महिनवा, त मन फरियाईल हो

ललना, नाहीं भावे सुख के सेजरिया, से रतिया डेरावन हो

दूसरे ही चढ़ले महिनवा, ना अन निक लागेला हो

ललना, देहिया में आवेला घुमरिया, सो आलस सतावेला हो

चढ़ी गइले तीसरे महिनवां, त दिल कहुं लागेला हो

ललना, रहि रहि आवेला ओकइया, सो कुछ नाहि भावेला हो

चउथा ही चढ़ले महिनवा, जम्हाई आवे लागल हो

ललना, नाही भावे घर से अंगनवा, से मन घबड़ाएला हो

पांच छव बिति गइले मसवा, से देहिया पहाड़ भइले हो

ललना नाहि तन होखेला सम्हार, से दुखवा सतावेला हो

सतवां सो बितले महिनवा, अठवां पुरन भइले हो

ललना नाहि आवे अंखिया निनरिया, सो जियरा बेहाल भइले हो

महादेव यह सुख गावत, गाई सुनावत हो

ललना, रानी दुखे भइली बेयाकुल, पीर ना सहल जाला हो

(भोजपुरी)

पुरबिया तान

2

सखी सब गावै सोहर, रतिया मनोहर हो
ललना जसोदा के भइले किसोरजी, मुरली मनोहर हो

पंडित अइलैं दुअरिया, बिचारै सगुनिया नु हो
ललना जुग—जुग जियै नंदलाल,आसीस सब देबै नु हो

केई लुटावै धेनु गइया, त केई रुपइया नु हो
ललना केई लुटावेला मोहर, रतिया मनोहर हो

नंद लुटावै धेनु गइया त मईया रूपइया नु हो
ललना, गोतिनी लुटावैं मोहर, रतिया मनोहर हो

अंगना में गावैंली गोतिनिया, त नाचै बबुनिया नु हो
ललना गुनी जन गावैले सोहर, रतिया मनोहर हो

(भोजपुरी)

3

भादो के रइनी भेयामन, बिजुली चमक उठे हे
ललना, तेहि छन परगटे नंदलाल, महल उठे सोहर हे

चन्नन लकड़ी कटायम, मंगल गायम हे

ललना, अरबे से दरबे लुटायम, सभ सुख पायम हे

सासु के देम तीसी तेलवा, ननद केरा गड़ी तेल हे

गोतनी के तेल-फुलेत, गोतिनियां के देल-लेल हे

सासु के देम खटोलवा, ननदी मचोला देम हे

ललना, गोतनी के लाल पलंगिया, हमहुं पइंचा लेम हे

सासु के देम इयरि-पियरि, ननदिया के साड़ी देम हे

ललना, गोतनी के लहँगा-पटोर, हमहुँ कबहुँ पइँचा लेम हे

(मगही)

4

बाजे बजना, गोकुल अंगना, नंद घर अनघोल हे
ललना रे, जनलि जशोदा एक बालक, रूप—रंग अमोल हे
फूल उझलल सुर सुरादिक, मचय गगनहूं शोर रे
ललना रे, भादब अन्हरिया तिथि आठम बन में नाचय मोर रे
कमल आनन विमलतन,कर कज घुरमल केश रे
ललना रे, हुलसि देखल नवल शिशु, सब जोरल प्रेमक डोर रे
नंद संग जशुमति लुटाओल, अन्न धन रतन सोन रे
ललना रे, भांट गाबय द्वार चढ़ि, देखि लल्ला चित्तचोर रे
गाबय ललना झूमि अंगना देखि, शिशु मुख जोर रे
ललना रे, सोहर " सुधापति" लीखि पुलकल हरिक जनम अनमोल रे.

(मैथिली)

5

जुग जुग जिअसु बबुनवा भवनवा के भाग जागल हो
जुग जुग जिअसु बबुनिया भवनवा के भाग जागल हो
ए ललना बबुआ होईहें कुलवा के दीपक, मनवा में आस जागल हो
ए ललना बबुनी होईहें कुलवा के दीपक, मनवा में आस जागल हो
आजु के दिनवा सोहावन, रतिया लोभावन हो
ए ललना, दिदिया के बबुआ जनमले, बबुनवा बड़ा सुन्नर हो
ए ललना, दिदिया के बबुनी जनमली, बबुनिया बड़ी सुन्नर हो
सासु सोहागिन बड़ा भागिन अन धन लुटावस हो
ए ललना, दुअरा पर बाजेला बधाव, अंगनवा उठे सोहर हो
नाची नाची गावेली ननदिया, भतीजवा खेलावेली हो
नाची नाची गावेली ननदिया, भतीजीया खेलावेली हो
ए ललना, रही—रही टिहुंकी चलावेली, रस बरसावेली हो

मुंहवा त हउए जइसे बाबूजी, अंखिया ह माई के हो

ए ललना, नकिया सुगनवा के ठोर, देखत मन भावेला हो

सासु जे आवेली गावत, ननदो बजावत हो

ए ललना, गोतिनी आवेली ताल ठोकत, अंगनवा उठे सोहर हो

बबुआ के होखी खूब नाम, कमईहें खूब दाम नु हो

बबुनी के होखी खूब नाम, कमईहें खूब दाम नु हो

ए भइया आई मिली दिहीं आसिस, बबुनवा रहे बनल हो

ए भइया आई मिली दिहीं आसिस, बबुनिया रहे बनल हो

(भोजपुरी)

6

आजु भइले नंदलाल, बधइया बाजन लगे

सासु जे अइली देवता पुजावन के, देबो कंगनवा गढ़ाय

देवता पूजन में कसर मसर करिहें, लेबो कंगनवा छिनाय

गोतनी जे अइहें सउरी लिपन के, देबो तिलरिया गढ़ाय

सउर लिपन में कसर—मसर करिहें, लेबो तिलरिया छिनाय

ननदी जे अइली आंख अंजन के, देबो बेलरिया गढ़ाय

आंख अंजन में कसर—मसर करिहें, लेबो बेलरिया छिनाय

पियवा जे अइहें होरिला देखन के, देबो होरिलवा देखाय

होरिला देखन में कसर—मसर करिहें, देबो बलइया देखाय

(भोजपुरी)

7

गंगा माई के उंच अररिया, तिवईया एक रोवेली हो

गंगा मइया अपनी लहरिया मोहे दिहतू, डुबी—धंसी मरी जइती हो

किया तोरा तिवई नईहर दुख,किया तोरा ससुर दुख हो

तिवई किया तोरा कंता बिदेसे, कवन दुखवा रोवेलू हो

नाही मोरा गंगा मइया नईहर दुख, नाही मोरा सासुर दुख हो

गंगा मइया नाही मोरा कंता बिदेस, कोखिये दुखवा रोईला हो

चुप होखू तिवई से चुप होखू, कटोरवे लोरवा पोछहूं हो

तिवई तोहरो जनमिहें नंदलाल, महलिया उठी सोहर हो

जाहूं मोरा गंगा मइया होरिला होईहें, अउरी बबुनिया होईहें हो

गंगा मइया सोनवे मढ़ाईब राउर घटवा, त रूपे लागी सिढ़ियां नु हो

अमवा के दस पांच फरवा से, त इमिली घवद फरे हो

ए तिवई बेलिया के निरमल डढ़िया, त झुलेले नरायन हो

(भोजपुरी)

8

छापक पेड़ छिउलिया, त पतवन धनबन हो
हो रामा, ताही तर खाड़ हरिनवा, हरिनी से बिसुरेले हो

चरतहीं चरत हरिनवा त हरिनी से पूछेले हो
हरिनी किया तोर चरहा झुरान कि पानी बिनु मुरझेलू हो

नाही मोरा चरहा झुरान, ना पानी बिनु मुरझेलीं हो
ए हरिना आजु राजा के छठिहार, तोहे मारी डरिहैं नु हो

पुरबिया तान

मचियही बईठली कोसिला रानी, हरिनी अरज करे हो
ए कोसिला मसवा त सिंझेला रसोइया, खलरिया हमे दिहितू न हो

जाहूं हरिनी घर आपन, खलरिया हम ना देईबी नु हो
हरिनी खलरी से खंझढ़ी मढ़ाईब, राम मोरा खेलिहें नु हो

जब जब बाजे खंझढ़िया,सबद सुनी अहंकेली हो
हरिनी खाड़ ढेकुलिया के पार, हरिन के बिसुरेली हो

(भोजपुरी)

9

ओही रे अजोधेया में राम जनमले, अजोधेया आनंदेले हो
ललना अजोधेया में बाजेला बधाव, महल उठे सोहर हो
सउरिन बइठली कोसिला रानी, गोदी में रमइया लेई हो
ललना अवध के सखिया अइली देखन, रमइया बड़ा सुन्नर हो
केवड़नि बोलेली केकइया रानी, सुन ए कोसिला रानी हो
केवड़नि बोलेली सुमितरा रानी, सुन ए कोसिला रानी हो
ए बहिनी कवन बरत तुहूं कइलू, त रमइया बड़ा सुन्नर हो
कातिक कईनी एकादसी, दोआरसी के पारन हो
ललना, अगहन कईनी एतवार, त राम फल पइलीं नु हो

(भोजपुरी)

पुरबिया तान

10

गंगाजी के उंच अररिया, देखत डर लागेला हो
ललना ताही तर ठाड़ी कोसिला रानी, मुंह हाथ धोवेली हो
ललना ताही तर ठाड़ी कोसिला रानी, मुकुती बनावेली हो
ए गंगाजी जाहू मोरा बबुआ जनमिहें, अवरू जनमिहें नु हो
ए गंगाजी, एक सहस्सर मुनि नेवतबि, जूठन बटोरबि नु हो
घरी राती गइले, पहर राति, अवरू तीसर राति हो
ए ललना, बाजे लागल अनघ बधावा, महलिया उठे सोहर हो
राजा दसरथ के पइयां खियाई गइले, मुनि लोग नेवतत हो
ए ललना कोसिला के अंचरा धुमिल भइले, जूठन बटोरत हो
राजा दसरथजी के पउआं चिआई गइले, गोतिया बटोरत हो
ए ललना, कोसिला के चुटकी खिआई गइले, गोतनी बटोरत हो

(भोजपुरी)

11

पातरि धनि सुकुमारी, पिया के दुलारू रे
ललना रे अंक लगाय पिया पूछन्हि कौने रंग बेदनरे
देह मोरा कांपै गहन जकां, केस मोरा भुइयें लोटु रे
अष्टो अंग चहकि उठू डांड़ से लहरि छुटू रे
कथी लै हे बाबा बियाहलनि देलनि ससुर घर रे
ललना रे रहितौं में बारि कुमारि दरद नहिं बुझितौं रे
भोर होईत पह फाटल कोइली सबद सुनू रे
ललना रे तखनि आ जनम लेल हरषित मन रे
भल कैल बाबा बियाहलनि देलनी ससुर घर रे
ललना रे रहितौं बारि कुमारि होरिल कत पबितौं रे

(मैथिली)

पुरबिया तान

12

सिता दइ डरहुक पातरि सिनहुक चाकरि रे
दोसर पिया के दुलारि बेदन कौना सहती रे
एक लाति देलन्हि एहरि पर दोसर देहरि पर रे
ललना तेसरहिं होरिला जनम लेल आब जीव बांचत रे
सासु मोरा सूतली भनसा घर, ननद कोहबर घर रे
ललना हुनि प्रभु सुतला मंदिर घर, किनका जगायब रे
सासु मोरा उठलि नचाबिते, ननदो गबाविते रे
ललना हुनि प्रभु उठला लुटाविते किछु नाही राखब रे
सेर भर चनिया लुटाएब,पसेरी भर सोनवा रे
ललना सौंसे अजोध्या लुटाएब किछु नहि राखब रे
ललना बूझि सूझि अजोध्या लुटाएब, हमहूं गरभ सं रे

(मैथिली)

13

कवना मासे जनमले रामचंद्र, त कवना मासे कृष्ण जनमे हो
ललना कवना मासे जनमले गनेसजी, त तीनों घरवा सोहर हो
चइत मासे जनमले रामचंद्र, भादो मासे कृष्ण जनमे हो
ललना कातिक मासे जनमे गनेस जी त, तीनों घरवा सोहर हो

का ई रे लुटावेली कोसिला रानी, का ई रे जसोदा रानी हो
ललना का ई रे लुटावेली, गउरा देबी, तीनों घरवा सोहर हो
सोनवा लुटावेली कोसिला रानी, माखन जसोदा मइया हो

सोनवा लुटावेली कोसिला रानी, माखन जसोदा मइया हो
ललना भंगिया के गोलवा, गउरा मइया, तीनों घरवा सोहर हो

कई रे बरिसवा में रामचंद्र, रावन के मारेले हो
ललना, कई रे बरिसवा में कृष्णचंद्र कंस के संहारेले हो
ललना कई रे बरिसवा में गनेसजी त दुनिया के रक्षपाल हो
बारहे बरिसवा में रामचंद्र रावन के मारेले हो
ललना आठवें बरिसवा में कृष्णचंद्र कंस के संहारेले हो
ललना पांचवें बरिसवा में गणेशजी, दुनिया के रक्षपाल हो

तुलसीदास प्रभुमास, चरन निक लागेला हो
ललना गाइले जनमदिन प सोहर, गाई के सुनाइले हो

(भोजपुरी)

14

प्रथम गनेस पद बंदि के, कुसल मनावहुं हे
ललना,बिघन हरन गननायक, सोहर गावहुं हे
प्रथम मास जब बितल,दोसर नियरायल हे
ललना तेसर मास चढ़ि आयल,पचमा बितिये गेल हे
चउथा मास चढ़ि आयेल, पचमा बितिये गेल हे
ललना छठे मास नियरायेल, गरभ जनायेल हे
सतमा मास जब आयेल, अठमा नियरायेल हे
ललना, नवमा मास जब आयेल, होरिला जनम भेल हे

(मगही)

मेल: mail.lokraag@gmail.com फोन: 7992359174